International Journal of Humanities, Commerce and Education
©PIJMS | Volume 1 | Issue 3 | November 2025 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v1i3.15

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन कौशल को बढ़ाने में अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र की प्रभावशीलता

Naveen Kumar Yadav[1], Krishna Kumar Yadav[2]

[1,2]Assistant Professor, Department of Education and Training, Chaudhary Charan Singh Degree College, Heonra, Etawah

Email: naveenccspg2019@gmail.com[1] | kkygbdc@gmail.com[2]

Received: 08 November 2025 | **Accepted:** 26 November 2025 | **Published:** 30 November 2025

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास में अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र की प्रभावशीलता का अध्ययन करना है। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों की तुलना में करके सीखना, परियोजना-आधारित अधिगम तथा उच्च स्तरीय चिंतन कौशल पर आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय, विश्लेषणात्मक एवं तार्किक बनाता है। इस शोध में अर्ध-प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग करते हुए नियंत्रण एवं प्रयोगात्मक समूह बनाए गए। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धति से पढ़ाए गए विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशल में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

मुख्य शब्द: *समालोचनात्मक चिंतन, अनुभवात्मक अधिगम, गतिविधि-आधारित शिक्षण, परियोजना-आधारित अधिगम, माध्यमिक विद्यालय।*

1. प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल तथ्यों एवं सूचनाओं का संचय कराना नहीं, बल्कि एक सर्वांगीण व व्यावहारिक बौद्धिक क्षमता का निर्माण करना है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका लक्ष्य विद्यार्थियों में उच्च स्तरीय चिंतन, समस्या-समाधान तथा स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता का सुव्यवस्थित विकास करना है (डीवी, 2018)। इक्कीसवीं सदी की जटिल चुनौतियों एवं सूचना-संवर्धित वातावरण में, मात्र स्मृति पर आधारित ज्ञान अपर्याप्त सिद्ध हो रहा है। ऐसे में, समालोचनात्मक चिंतन (क्रिटिकल थिंकिंग) एक मौलिक कौशल के रूप में उभरा है, जो विद्यार्थियों को किसी भी सूचना का विश्लेषण, मूल्यांकन, तर्कसंगत निष्कर्षण एवं सृजनात्मक समाधान ढूँढ़ने में सक्षम बनाता है।

माध्यमिक शिक्षा का स्तर यह दृष्टि से विशेष रूप से संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह वह अवस्था है जहाँ किशोरावस्था में विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक संरचनाएँ, विश्वास तथा दृष्टिकोण परिपक्व हो रहे होते हैं। इस चरण में, यदि शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तकों एवं रटने की पद्धति तक सीमित रहता है, तो विद्यार्थियों में जिज्ञासा, अन्वेषण तथा तार्किक पड़ताल की प्रवृत्ति का दमन हो सकता है। इसके विपरीत, यदि इस अवस्था में समालोचनात्मक चिंतन के बीज रोपे जाएँ, तो यह भविष्य में एक सक्रिय, जिम्मेदार एवं तर्कशील नागरिक बनने की नींव रख सकता है (फैसियोनी, 1990)। अतः माध्यमिक स्तर पर इन कौशलों का विकास एक शैक्षणिक अनिवार्यता बन जाता है।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

पारंपरिक, शिक्षक-केंद्रित एवं व्याख्यान-आधारित शिक्षण पद्धतियाँ अक्सर इस चुनौती को पूरा करने में अपर्याप्त सिद्ध होती हैं, क्योंकि इनमें विद्यार्थी एक निष्क्रिय श्रोता मात्र बनकर रह जाता है। इनकी सीमाओं को दूर करने हेतु, **अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र** एक कारगर विकल्प प्रस्तुत करता है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एक क्रांतिकारी बदलाव लाता है, जहाँ विद्यार्थी 'सुनने' के स्थान पर 'करके' सीखता है। अनुभवात्मक अधिगम (एक्सपीरिएंशियल लर्निंग) का सिद्धांत, जिसे कोल्ब (1984) ने व्यवस्थित रूप प्रदान किया, इस बात पर जोर देता है कि ज्ञान का निर्माण वास्तविक अनुभवों के माध्यम से, उन पर चिंतन करके, अमूर्त अवधारणाएँ बनाकर और फिर उन्हें नई परिस्थितियों में परखकर होता है। इस प्रकार, यह चक्र विद्यार्थी को एक सक्रिय सहभागी बना देता है।

गतिविधि-आधारित शिक्षण इसी सिद्धांत को कक्षा-कक्ष में व्यावहारिक रूप देता है। इसमें समस्या-समाधान गतिविधियाँ, भूमिका निर्वाह (रोल प्ले), केस स्टडी विश्लेषण, वाद-विवाद, परियोजना-आधारित अधिगम तथा वैज्ञानिक प्रयोगों जैसी विधियाँ शामिल हैं। जब कोई विद्यार्थी किसी समस्या से जूझता है, परिकल्पना बनाता है, साक्ष्य एकत्र करता है और समाधान प्रस्तुत करता है, तो वह स्वाभाविक रूप से विश्लेषण, मूल्यांकन एवं निर्माण जैसे उच्चस्तरीय चिंतन कौशलों का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए, एक परियोजना जहाँ विद्यार्थियों को अपने स्थानीय जलस्रोत की गुणवत्ता का अध्ययन करना है, वह उन्हें केवल रासायनिक परीक्षण ही नहीं सिखाती, बल्कि आँकड़ों का विश्लेषण, कारण-परिणाम संबंध स्थापित करना और परिणामों के आधार पर सामुदायिक जागरूकता के उपाय सुझाने जैसे जटिल कार्यों में भी संलग्न करती है। यह संपूर्ण प्रक्रिया उनके समालोचनात्मक चिंतन को प्रखर बनाती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक स्तर पर शिक्षण की प्रचलित पद्धति अभी भी मुख्यतः पारंपरिक व्याख्यान विधि पर केंद्रित है। इस पद्धति में शिक्षक ज्ञान का प्राथमिक स्रोत एवं प्रसारक होता है, जबकि विद्यार्थी एक निष्क्रिय, ग्रहणशील श्रोता के रूप में सीमित रह जाते हैं (फ़्रायर, 2014)। इस एकतरफ़ा संचार में पाठ्यपुस्तक की सामग्री का शाब्दिक वाचन, तथ्यों का क्रमिक प्रस्तुतीकरण तथा उन्हें याद रखने पर बल दिया जाता है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी की भूमिका मुख्य रूप से सुनने, नोट्स लेने और परीक्षा के लिए उन्हें रटने तक सीमित होती है। परिणामस्वरूप, कक्षा में ज्ञान का प्रवाह एकदिशीय रहता है तथा विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच के विकास के लिए आवश्यक संज्ञानात्मक संलग्नता का अभाव रहता है।

इस पद्धति की मुख्य सीमाएँ स्पष्ट हैं। प्रथम, यह रटंत प्रणाली को प्रोत्साहित करती है, जहाँ विद्यार्थी सूचनाओं को गहराई से समझे बिना, उनके अर्थ व संदर्भ पर विचार किए बिना, केवल स्मृति पर भरोसा करते हैं। द्वितीय, इसमें प्रश्न पूछने, संदेह करने तथा वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त अवकाश या प्रोत्साहन नहीं मिलता। तृतीय, यह वास्तविक जीवन की जटिल समस्याओं एवं पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के बीच एक खाई उत्पन्न करती है, जिससे विद्यार्थी यह समझने में असमर्थ रहते हैं कि अर्जित ज्ञान का व्यावहारिक प्रयोग कैसे किया जाए (गुप्ता, 2019)। ऐसी शिक्षण स्थितियाँ विद्यार्थियों को समस्याओं की सतही समझ तक सीमित रखती हैं, जबकि उनके मूल कारणों की पड़ताल, विभिन्न समाधानों का मूल्यांकन और तार्किक निर्णयन जैसे उच्चस्तरीय चिंतन कौशल अविकसित रह जाते हैं।

इन चुनौतियों के मद्देनज़र, शैक्षणिक सुधार के प्रयासों में अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धतियों पर बल दिया जाने लगा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी 'करके सीखना' (एक्टिव लर्निंग) तथा समग्र व समेकित शिक्षण पर जोर देती है। किंतु, केवल नीतिगत सिफारिशें या सैद्धांतिक पक्ष पर्याप्त नहीं हैं। इन नवीन पद्धतियों की दावा की गई प्रभावशीलता को वैज्ञानिक एवं प्रमाण-आधारित शोध के माध्यम से जाँचना अत्यावश्यक हो जाता है। यह आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से और भी महत्वपूर्ण है:

प्रथम, वैधता स्थापित करने हेतु: शिक्षण की कोई भी नवीन पद्धति तभी व्यापक रूप से स्वीकार्य एवं कार्यान्वयन के योग्य हो सकती है, जब उसके सकारात्मक परिणामों का कड़ाई से वैज्ञानिक मूल्यांकन किया गया हो। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि कर सकता है कि क्या अनुभवात्मक शिक्षण वास्तव में पारंपरिक विधि की तुलना में समालोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास में अधिक प्रभावी है (सिंह & शर्मा, 2021)। द्वितीय, क्रियान्वयन की रणनीति निर्धारित करने हेतु: विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ (जैसे- परियोजना कार्य, भूमिका निर्वाह, प्रयोगशाला कार्य) में से कौन-सी विधि किस स्तर के विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयुक्त है, यह जानने के लिए अनुसंधान आवश्यक है। तृतीय, संसाधनों के आवंटन का औचित्य सिद्ध करने हेतु: इन पद्धतियों के लिए प्रायः अतिरिक्त संसाधनों, शिक्षक प्रशिक्षण तथा समय की आवश्यकता होती है। एक ठोस शोध अध्ययन इन संसाधनों के आवंटन के पक्ष में प्रबल तर्क प्रस्तुत कर सकता है।

इसके अतिरिक्त, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी एक विशेष संज्ञानात्मक व सामाजिक-भावनात्मक अवस्था में होते हैं, जहाँ उनकी तार्किक क्षमता का तीव्र विकास हो रहा होता है (पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत)। इस नाजुक अवस्था में उपयुक्त शैक्षणिक हस्तक्षेप का दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। अतः, यह जानना कि क्या अनुभवात्मक शिक्षण इस विकास को अनुकूलित कर सकता है, एक गहन अकादमिक पड़ताल की माँग करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशल के स्तर का अध्ययन करना।
2. अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र का विद्यार्थियों के चिंतन कौशल पर प्रभाव ज्ञात करना।
3. पारंपरिक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धतियों के प्रभाव की तुलना करना।

4. शोध परिकल्पनाएँ

1. अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र का उपयोग करने से विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर होगा।
2. पारंपरिक शिक्षण पद्धति की तुलना में गतिविधि-आधारित शिक्षण अधिक प्रभावी सिद्ध होगा।

5. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में **अर्ध-प्रयोगात्मक शोध विधि** का प्रयोग किया गया है। इस शोध विधि का चयन इसलिए किया गया क्योंकि शैक्षिक परिस्थितियों में पूर्णतः नियंत्रित प्रयोग करना प्रायः संभव नहीं होता। अर्ध-प्रयोगात्मक शोध के माध्यम से प्रयोगात्मक तथा नियंत्रण समूहों के बीच शिक्षण विधियों के प्रभावों की तुलनात्मक जाँच की जा सकती है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य कक्षा 9 के विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास पर विभिन्न शिक्षण विधियों के प्रभाव का अध्ययन करना है।

इस शोध के लिए **नमूना चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि** द्वारा किया गया। अध्ययन का नमूना एक माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 9 के कुल **60 विद्यार्थियों** से निर्मित है। चयनित विद्यार्थियों को दो समान समूहों में विभाजित किया गया, जिससे निष्पक्ष एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त किए जा सकें। समूह विभाजन इस प्रकार किया गया—

(1) **प्रयोगात्मक समूह**: 30 विद्यार्थी

(2) **नियंत्रण समूह**: 30 विद्यार्थी

दोनों समूहों के विद्यार्थियों की आयु, शैक्षिक स्तर तथा बौद्धिक क्षमता को यथासंभव समान रखने का प्रयास किया गया, ताकि अध्ययन के परिणाम केवल शिक्षण विधि के प्रभाव को दर्शाएँ।

शोध में डेटा संग्रह हेतु **समालोचनात्मक चिंतन कौशल परीक्षण** को शोध उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। यह परीक्षण विद्यार्थियों की तार्किक सोच, विश्लेषण क्षमता, समस्या समाधान कौशल तथा निर्णय लेने की योग्यता का आकलन करने हेतु उपयुक्त

माना गया। परीक्षण को अध्ययन के प्रारंभ में **पूर्व-परीक्षण** तथा अध्ययन के अंत में **पश्चात-परीक्षण** के रूप में दोनों समूहों पर समान रूप से लागू किया गया। इससे शिक्षण हस्तक्षेप के पूर्व एवं पश्चात् विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन स्तर में हुए परिवर्तन का स्पष्ट आकलन संभव हुआ।

नियंत्रण समूह में पारंपरिक व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण कराया गया। इस विधि में शिक्षक केंद्रित शिक्षण पर बल दिया गया, जिसमें विषय-वस्तु का मौखिक प्रस्तुतीकरण, पाठ्यपुस्तक आधारित अध्ययन तथा सीमित प्रश्नोत्तर गतिविधियाँ सम्मिलित थीं। इस समूह में विद्यार्थियों की भूमिका अपेक्षाकृत निष्क्रिय रही तथा उनका मुख्य कार्य शिक्षक द्वारा दी गई जानकारी को ग्रहण करना था।

इसके विपरीत, **प्रयोगात्मक समूह** में आधुनिक एवं नवाचारी शिक्षण विधियों का प्रयोग किया गया। इसमें **करके सीखना**, **परियोजना-आधारित शिक्षण** तथा **गतिविधि-आधारित शिक्षण** को प्रमुखता दी गई। विद्यार्थियों को समूह कार्य, समस्या समाधान, परियोजना निर्माण, चर्चा एवं प्रस्तुतीकरण जैसी गतिविधियों में सक्रिय रूप से सम्मिलित किया गया। इन विधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने, तर्क करने, विश्लेषण करने तथा निष्कर्ष निकालने के अवसर प्रदान किए गए, जिससे उनके समालोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास में सहायता मिली।

अंततः पूर्व-परीक्षण एवं पश्चात-परीक्षण से प्राप्त अंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि प्रयोगात्मक शिक्षण विधियों का समालोचनात्मक चिंतन कौशल पर पारंपरिक व्याख्यान विधि की तुलना में अधिक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार अपनाई गई शोध विधि अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उपयुक्त एवं प्रभावी सिद्ध होती है।

6. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

विश्लेषण का प्राथमिक लक्ष्य यह निर्धारित करना था कि क्या अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धति, पारंपरिक व्याख्यान विधि की तुलना में, माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास में अधिक प्रभावी है। विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय पैकेज फॉर सोशल साइंसेज (एस.पी.एस.एस) संस्करण 25 का उपयोग किया गया तथा महत्व स्तर (α) 0.05 निर्धारित किया गया।

तालिका 1: पूर्व-परीक्षण में दोनों समूहों के औसत अंकों की तुलना

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	औसत अंक (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मान	p-मान
प्रयोगात्मक समूह	30	45.20	6.10	0.265	0.792
नियंत्रण समूह	30	44.80	5.95		

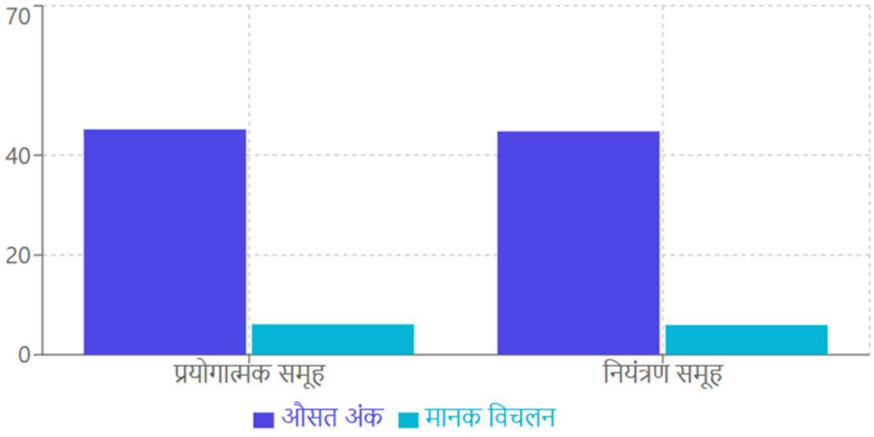

विश्लेषण: p-मान = 0.792 (> 0.05), दोनों समूह सांख्यिकीय रूप से समतुल्य थे

व्याख्या: तालिका 1 से स्पष्ट है कि हस्तक्षेप से पूर्व, प्रयोगात्मक समूह के औसत अंक (M=45.20, SD=6.10) एवं नियंत्रण समूह के औसत अंक (M=44.80, SD=5.95) लगभग समान थे। दोनों समूहों के औसत अंकों में अंतर की सांख्यिकीय महत्त्वता जाँचने हेतु

किए गए **स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण** के परिणाम (t(58) = 0.265, p = 0.792) ने इस बात की पुष्टि की। चूँकि p-मान (0.792) निर्धारित 0.05 महत्व स्तर से कहीं अधिक है, अतः **शून्य परिकल्पना** को स्वीकार किया जाता है। इसका स्पष्ट निहितार्थ यह है कि अध्ययन की प्रारंभिक अवस्था में, दोनों समूहों की समालोचनात्मक चिंतन क्षमता सांख्यिकीय रूप से समतुल्य थी। यह समरूपता शोध डिजाइन की आंतरिक वैधता के लिए एक अनिवार्य शर्त है, जो यह सुनिश्चित करती है कि पश्च-परीक्षण में देखे गए किसी भी अंतर का कारण भिन्न शिक्षण हस्तक्षेप ही है, न कि समूहों की प्रारंभिक असमानता (क्रेशवेल, 2014)।

तालिका 2: पश्च-परीक्षण में दोनों समूहों के औसत अंकों की तुलना एवं अंतर

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	औसत अंक (Mean)	मानक विचलन (SD)	अंक वृद्धि (Mean Gain)	t-मान (समूहों के बीच)	p-मान
प्रयोगात्मक समूह	30	**62.40**	5.20	**+17.20**	8.674	0.000
नियंत्रण समूह	30	50.10	6.00	+5.30		

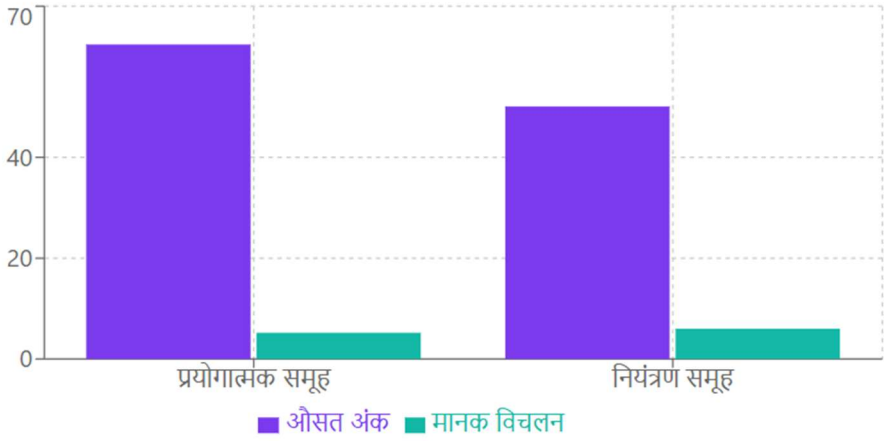

विश्लेषण: p-मान = 0.000 (< 0.05), अत्यंत महत्वपूर्ण अंतर, t(58) = 8.674

व्याख्या: 12-सप्ताह के शिक्षण हस्तक्षेप के पश्चात लिए गए पश्च-परीक्षण के परिणाम (तालिका 2) अत्यंत स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण हैं। प्रयोगात्मक समूह का औसत अंक **62.40** (SD=5.20) तक पहुँच गया, जबकि नियंत्रण समूह का औसत अंक केवल **50.10** (SD=6.00) रहा। दोनों समूहों ने अपने पूर्व-परीक्षण अंकों में वृद्धि दर्ज की, किंतु **अंक वृद्धि** के स्तर में भारी असमानता थी। प्रयोगात्मक समूह में औसतन **17.20 अंकों** की उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जबकि नियंत्रण समूह में यह वृद्धि मात्र **5.30 अंकों** तक सीमित रही।

दोनों समूहों के पश्च-परीक्षण अंकों के बीच अंतर की सांख्यिकीय महत्त्वता जाँचने पर प्राप्त **स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण** का परिणाम (t(58) = 8.674, p = 0.000) अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। p-मान 0.000 होने का तात्पर्य है कि यह अंतर **0.001 के महत्व स्तर** पर भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, **शून्य परिकल्पना को अस्वीकार** कर दिया जाता है और **वैकल्पिक परिकल्पना** को स्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में, प्रयोगात्मक समूह (अनुभवात्मक शिक्षण) द्वारा प्राप्त उच्च औसत अंक संयोगवश नहीं, बल्कि अपनाई गई शिक्षण पद्धति के कारण हैं।

इसके अतिरिक्त, प्रयोगात्मक समूह के **मानक विचलन** में कमी (6.10 से घटकर 5.20) यह संकेत करती है कि गतिविधि-आधारित शिक्षण ने न केवल औसत प्रदर्शन को बढ़ाया, बल्कि समूह के भीतर विद्यार्थियों के प्रदर्शन में **समरूपता**भी लाई। अर्थात, इस पद्धति ने विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों के चिंतन कौशल को लाभ पहुँचाया। निष्कर्षतः, आँकड़ों का विश्लेषण इस बात का स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है कि पारंपरिक विधि की तुलना में, अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण, माध्यमिक विद्यार्थियों के समालोचनात्मक चिंतन कौशल को विकसित करने में **अधिक प्रभावी** है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष दृढ़ता से यह प्रमाणित करते हैं कि अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र, माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन कौशल के विकास हेतु एक अत्यंत प्रभावी एवं परिवर्तनकारी रणनीति है। आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि परियोजना-आधारित अधिगम, समूह चर्चा, भूमिका निर्वाह तथा वैज्ञानिक अन्वेषण जैसी विधियों से युक्त शिक्षण हस्तक्षेप ने प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के चिंतन कौशल में न केवल उल्लेखनीय मात्रात्मक वृद्धि (औसतन 17.20 अंक) की, बल्कि उनकी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में एक गुणात्मक परिवर्तन भी लाया। यह परिवर्तन इस तथ्य में दृष्टिगोचर होता है कि अनुभवात्मक शिक्षण ने विद्यार्थियों को करके सीखने के माध्यम से जटिल समस्याओं के समक्ष स्वयं को रखने के अवसर दिए, जिससे वे तथ्यों का निष्क्रिय ग्रहणकर्ता न रहकर सक्रिय अन्वेषक, विश्लेषक एवं समाधान-प्रस्तोता बन गए।

इस प्रक्रिया का मूल सिद्धांत यह था कि ज्ञान का निर्माण वास्तविक अनुभव एवं उस पर चिंतन के माध्यम से होता है (कोल्ब, 1984)। जब विद्यार्थी किसी परियोजना में डेटा एकत्र करते हैं, परस्पर विचार-विमर्श करते हैं या किसी समस्या के लिए मूर्त समाधान प्रस्तुत करते हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से विश्लेषण, मूल्यांकन, अनुमान एवं निर्माण जैसी उच्चस्तरीय बौद्धिक क्रियाओं में संलग्न होते हैं। यह संलग्नता ही समालोचनात्मक चिंतन की आधारशिला है। इसके विपरीत, नियंत्रण समूह जहाँ पारंपरिक व्याख्यान विधि से जुड़ा रहा, वहाँ अंक वृद्धि न्यून (5.30 अंक) रही। यह अंतर स्पष्ट करता है कि रटने एवं श्रवण पर आधारित शिक्षण, विद्यार्थियों को अवधारणाओं की गहन समझ एवं उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए आवश्यक बौद्धिक चुनौती प्रदान करने में अक्षम रहता है।

निष्कर्षतः, यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रतिपादित 'करके सीखने' के दर्शन को क्रियान्वित करना समय की अनिवार्य माँग है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को विद्यार्थी-केंद्रित बनाने, सहयोगात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने तथा पाठ्यचर्या को वास्तविक जीवन की स्थितियों से जोड़ने से न केवल शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार होता है, बल्कि एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण होता है जो तर्कसंगत, जिज्ञासु, समस्या-समाधान में दक्ष तथा सूचना का विवेकपूर्ण मूल्यांकन करने में सक्षम है। अतः माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक सुधारों को गति देने के लिए अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियों को अपनाना, शिक्षकों को इस हेतु प्रशिक्षित करना तथा समुचित संसाधनों का आवंटन करना एक सार्थक एवं भविष्योन्मुखी कदम सिद्ध होगा।

8. शैक्षिक निहितार्थ

1. विद्यालयों में गतिविधि-आधारित शिक्षण को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।
2. शिक्षकों को अनुभवात्मक अधिगम से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
3. मूल्यांकन प्रणाली में उच्च स्तरीय चिंतन कौशल को महत्व दिया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

[1]. डीवी, जॉन. (2018). *जनतंत्र एवं शिक्षा.* नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन।

[2]. फैसियोनी, पीटर ए. (1990). *समालोचनात्मक चिंतन: इसकी परिभाषा और आकलन पर एक विवरण.* कैलिफोर्निया: कैलिफोर्निया शैक्षणिक प्रेस।

[3]. कोल्ब, डेविड ए. (1984). *अनुभवात्मक अधिगम: अनुभव शिक्षा एवं विकास का स्रोत.* न्यू जर्सी: प्रेंटिस-हॉल।

[4]. फ़ायर, पॉलो. (2014). *उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र* (30वीं वर्षगाँठ संस्करण). न्यूयॉर्क: ब्लूम्सबरी एकेडमिक।

[5]. गुप्ता, अमित. (2019). भारतीय कक्षाओं में समालोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देना: चुनौतियाँ और अवसर। *शैक्षणिक अध्ययन भारतीय जर्नल, 12*(3), 45-58।

[6]. सिंह, रवि एवं शर्मा, प्रिया. (2021). माध्यमिक स्तर पर गतिविधि-आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता। *शिक्षा एवं अनुसंधान जर्नल, 8*(2), 112-125।

[7]. पियाजे, जीन. (1970). *विज्ञान की शिक्षाशास्त्र.* न्यूयॉर्क: ग्रॉस्मैन।

[8]. क्रेशवेल, जॉन डब्ल्यू. (2014). *शोध डिजाइन: गुणात्मक, मात्रात्मक और मिश्रित विधियों के दृष्टिकोण* (4th ed.). लंदन: SAGE प्रकाशन।

[9]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा.* नई दिल्ली: NCERT।

[10]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।

[11]. एनिस, रॉबर्ट एच. (1987). समालोचनात्मक चिंतन और विषय-वस्तु की विशिष्टता। *शैक्षणिक शोधकर्ता, 16*(4), 4-10।

[12]. डेवी, जॉन. (1933). *हम कैसे सोचते हैं: पुनः प्रतिपादन जो प्रतिबिंबित चिंतन से शैक्षिक प्रक्रिया से संबंध रखता है.* बोस्टन: डी.सी. हीथ एंड कंपनी।

Cite this Article:

Naveen Kumar Yadav, Krishna Kumar Yadav "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन कौशल को बढ़ाने में अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र की प्रभावशीलता", International Journal of Humanities, Commerce and Education, ISSN: *3108-0456 (Online), Volume 1, Issue 3, pp. 34-40, November 2025.*

Journal URL: *https://ijhce.com/*

DOI: *https://doi.org/10.59828/ijhce.v1i3.15*